

पद १४८

(राग: कानडा - ताल: त्रिवट)

जानि घन गरजे बिरला कोई ।।ध्रु.।। खनन खनन घनन घनन ।
उबताक कननन उडत निशान ।।१।। झनन झनन मानिक को ।

कहेना सननन उडे जैसे बान ।।२।।